56 P
720
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1163/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 720

S / 2011

वन्दे मातरम्

कांग्रेस का बिगुल

और

[illegible] भारत

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

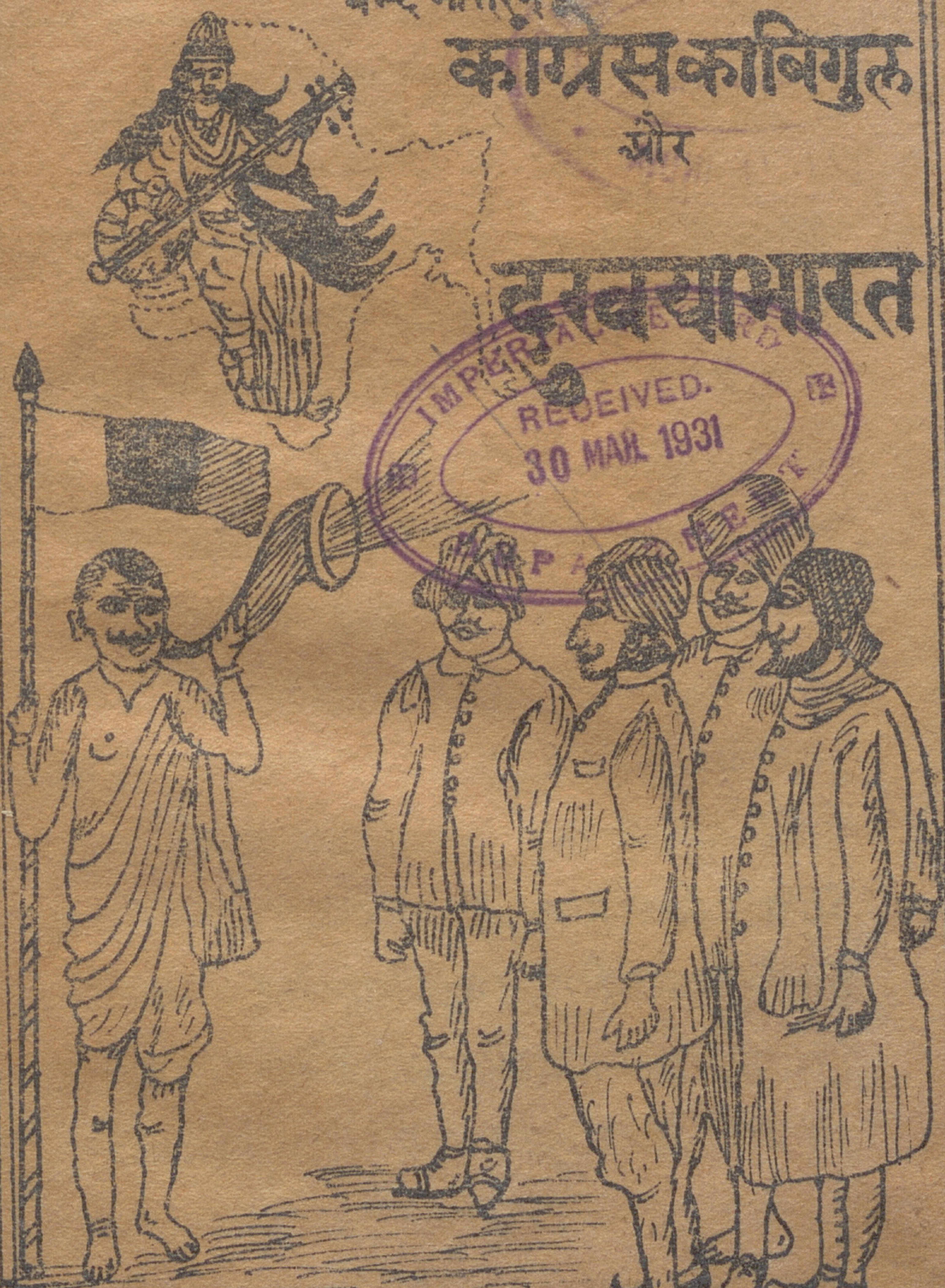

प्रकाशक

ठाकुर देबी सिंह जाट पुस्तकमाला

एजेन्ट:- अग्रवाल बुक डिपो खारी बावली देहली ॥

चौथी बार १०००   सन ३० (شاہین پریس دہلی)   मूल्य)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 720
Date 18.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
C76C

भजन

छीन सकती है नहीं सरकार बन्दे मातरम्।
हम ग़रीबों के गले का हार बन्दे मातरम्॥ १॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता ज़रूर।
कान में पहुंची जहां झंकार बन्दे मातरम्॥ २॥
हम वही हैं जो कि होना चाहियें इस वक़्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्दे मातरम्॥ ३॥
जेल में चक्की घसीटे भूख से हो मर रहा।
उस समय हो बक रहा बेज़ार बन्दे मातरम्॥ ४॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से।
भोंक दे सीने में वह तलवार बन्दे मातरम्॥ ५॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी सर हिलाकर कह दिया।
होगया इसको तो यह आज़ार बन्दे मातरम॥ ६॥
ईद होली और दशहरा शुबरात से भी सौगुना।
है हमारा लाडला त्योहार बन्दे मातरम्॥ ७॥
ज़ालिमों का ज़ुल्म भी काफ़ूर सा उड़ जायेगा।
फ़ैसला होगा सरे दरबार बन्दे मातरम्॥ ८॥

ग़ज़ल आज़ादी का पैग़ाम

आबरू पर मुल्क की हम सब फ़िदा होजायेंगे।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फ़िदा होजायेंगे॥
हासिल आज़ादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देखलेना दास के हम नक़्शे क़दम होजायेंगे॥
क्यों हमें कमज़ोर समझे हो निहत्था जानके।
गर बिगड़बैठे तो फिर हम इक बला होजायेंगे॥
आग से मत खेलना हम हैं वह गोले आग के।
गर भड़क उठे तो पैग़ामे क़ज़ा होजायेंगे॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है।
आगया है वक़्त अब नाले रसा होजायेंगे॥
माल की होगी ज़रूरत तो लुटादेंगे गुहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा होजायेंगे॥
एक नये अन्दाज़ से कश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहरलाल नेहरू नाख़ुदा होजायेंगे॥
आनेवाला वक़्त है लो देखलेना दोस्तो।
आज तो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या होजायेंगे

ग़ज़ल

नहीं रखनी सरकार ज़ालिम नहीं रखनी

आई थी व्योपार करन को, जहांगीर के शरणा रहन को,
बनी गले का हार ॥ ज़ालिम नहीं रखनी० ॥
जलियां वाले बाग़ के अन्दर, निर्दोषों पर गोली चलाकर
मारे कई हज़ार ॥ ज़ालिम नहीं रखनी ॥
ग़रीब किसान लगान लगाकर, भूखे दिये हैं मार ॥ सर०
लूट से इसकी बचा न कोई, बढ़ई चमार लुहार ॥ ज़ालिम०
क़ानूनों का जाल बिछाया, ऐसी है बदकार ॥ ज़ालिम०
हिन्दू, मुस्लिम, जाट, बनिये, लड़ाये बीच दरबार ॥ ज़ा०
खेतों से करें उपाई, धमकी की भरमार ॥ ज़ालिम०
पेशावर में गोली चलाकर, मारे कई हज़ार ॥ ज़ालिम०
झन्डा आज़ादी का लेकर, घर घर करो प्रचार ॥ ज़ा०
गांधी के अब बनों सिपाही, करो देश उद्धार ॥ ज़ालिम०
मिले स्वराज्य तो निकले कांटा, हो जाये बेड़ा पार ॥ ज़ा०

ग़ज़ल

हमारे मुल्क की यह आख़री लड़ाई है (आरत above मुल्क)

न होगी जंग फिर ऐसी महात्मा ने बताई है
करो तुम जंग दुश्मन से अहिंसा धारकर दिल में
न ऐसा वक़्त पाओगे हवा ऐसी यह आई है
करो तुम हिम्मते मर्दो मदद देगा ख़ुदा तुमको
बनाया आसमां जिसने ज़मीं जिसने बनाई है
मरेगा देश के हक़ में वही ग़ाज़ी कहायेगा
रहेगा मुंह छिपाकर जो वही ग़द्दार भाई है ॥
तुम्हें यह जेल की घुड़की दिखाकर के डरायेंगे
मगर तुम एक मत सुनना करो इनपर चढ़ाई है
तुम्हारे धर्म ईमां की सचाई देख लेने को
ज़माने भर ने आकर के नज़र तुम पर जमाई है
न करना ख़्याल यह दिल में कि आज़ादी नहीं होगी
यह थोड़े दिन की सख़्ती है जो ज़ालिम ने चलाई है
मुसीबत जितनी सहते हो तुम्हें राहत दिखायेगी
हिना जो पिस गई पत्थर से वह ही रंग लाई है ॥
वह पछतायेगा पीछे से न मानेगा जो गांधी की
तअस्सुब को हटा दीजे वतन की यह लड़ाई है

ग़ज़ल

ज़ालिमों के ज़ुल्म को बिल्कुल मिटाना चाहिये
अब तो कुछ वीरा तुम्हें करके दिखाना चाहिये ॥
जब तुम्हारे देश में है जंग आज़ादी ठनी ।
क्या तुम्हें इसवक्त पर भी मुंह छिपाना चाहिये
आप के सब से बड़े नेता चले गये जेल में ।
कुछ तो ग़ैरत आप को भी शर्म आना चाहिये ॥
मर्द कहलाते हो तुम कुछ तो करो मर्दानगी
वर्ना हाथों में तुम्हें चूड़ी चढ़ाना चाहिये ॥
देश की और क़ौम की हालत को जो सुनता नहीं
उनके माथे पर भी स्याही का टीका लगाना चाहिये ॥
गाय और सूअर की चर्बी ख़ून से कपड़े बुने
ऐसे नापाकों के कपड़ों को जलाना चाहिये
अब विदेशी को न वरतो कोई कपड़ा हो या चीज़
ऐसे सब सामान पर लाहोल पढ़ना चाहिये ॥
हुक्म है गांधी का यह सब वस्त्र खद्दर के बनें
शुद्ध खद्दर की लंगोटी तक बनाना चाहिये

गांधी महमा

गांधी तो आज हिन्द की इक शान बन गया

सारी मनुष्य जाती का अभिमान बन गया
तू सत्य, अहिन्सा, दया, निस्वार्थ से
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बन गया
तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देखकर
दुश्मन भी बेज़बान हो हैरान बन गया
तेरी नसीहतों में वह जादू का है असर
जिस को लगी हवा तेरी इन्सान बन गया
तू दोस्त है हर क़ौम का हर दिल अज़ीज़ है
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया ॥
गो आज हिन्द उठ न सके आप से बल धीर
फिर भी स्वराज्य लेने का सामान बन गया
धिक्कार है इन्द्र हमें तैंतीस करोड़ को
तुझ सा फ़क़ीर जेल का मेहमान बन गया

राष्ट्री देवियां

झन्डा आज़ादी का निकली हैं यह लेकर देवियां
मर्द बुज़दिल बन गये और जंग में नर देवियां ॥
ए जवां मर्दो तुम्हें कुछ शर्म आनी चाहिये
जेल जाने के लिये उठी हैं यकसर देवियां ॥

रूह लक्ष्मी बाई और दुर्गावती की इनमें है
हैं चलीं सत्याग्रह करने जो उठकर देवियां ॥
तोप से बन्दूक से यह अब ज़रा डरतीं नहीं
क्या डरेंगी फिर पुलिस के खाके हन्टर देवियां
सत्य वतीजी और मिसिज़ मित्रा है फ़ख़्रे मुल्के हिन्द
क़ाबिले ताज़ीम हों दोनों न क्यों कर देवियां ॥
शोख़ देवी शक्ति उनकी आत्मा में है ज़रूर
लौटेंगी जेलों से यह स्वाराज्य लेकर देवियां

रसीया ॥

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग-जंग में पकडूंगी तलवार
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ
और मैं करूं सूत तैयार, जंग में पकडूंगी
ऊंच नीच सबको बतलाओ, गांधी का पैग़ाम सुनाओ,
मैं भी करूंगी नमक तैयार-जंग में
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी,
गोली खाने को तैयार---जंग में ।
भारत को आज़ाद करूंगी, दुश्मन को बर्बाद करूंगी
कुछ मत सोच करो भरतार---जंग में

असहयोग की फ़ौज सजाओ, कांग्रेस की तोप लगाओ,
दुश्मन भगे समन्दर पार---जंग में
गांधी जी बन रहे क़लन्दर, शीशे पंज में पड़ गये बन्दर,
देखो कहा करे करतार-----जंग में
अब गांधी ने क़दम बढ़ाया, सब का दिल दहलाया,
देवी होरही हैं तैयार-----जंग में
आज़ादी की छिड़ी जंग अब, बनो सरोजनी सत्यवती सब
बहनों होजाओ हुशयार----जंग में
यह रसया गा गा के सुनावे, जोश ज़नानों को भी आवे,
होरहा वर्मा भी तैयार-----जंग में

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें।

महात्मा गांधी की गयारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा
प्रजा के आगे तुझे सितमगर सर अपना अब तो झुकाना होगा
(१) नशीली चीज़ें शराब गांजा अफ़ीम आदिक वह बुद्धि हरतीं
मिटाके इन की खरीद बिकरी दुकानें सारी उठाना होगा
(२) हमारे सिक्के की दर को साहब यदा बढ़ा करके लूटते हो ।

अब एक शिलिंग चार पैनी ही भाव उसका बनाना होगा ॥
(३) लगान आधा करो ज़मीं का किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
मेहक्मा इसका हमारी कौनसिल के ताबे तुमको रखाना होगा
(४) फ़ज़ूल खर्ची बिला ज़रूरत जो फ़ौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा इसका ज़रूर साहब घटाना होगा
(५) बड़े २ भारी २ वेतन उड़ाते हैं जो आला अफ़्सर।
उसी म्वाफ़िक़ लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा
(६) स्वदेशी कपड़े करें तरक़्क़ी बिदेशी कपड़े न आने पावें।
बिदेशी कपड़े पै और महसूल ज़्यादा तुमको लगाना होगा
(७) समुन्दर तट का जहाज़ी बान जनहाथ में हो बिदेशियों के
उसे हमारे महाजनों के अधीन होकर चलाना होगा ॥
(८) जिन्हें क़तल या क़तल इरादा सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें।
काया क़ैदी पोली टिकिल सब तुरंत साहब छुड़ाना होगा ॥
(९) उठा लिये जायें राजनीतिक जो मामले चल रहे मुल्क में।
जो १२५ दफ़ा अलिफ़ है उसे तो बिलकुल मिटाना होगा
अठारे का एक्ट रेगोलेशन तथा दफ़ा ऐसी सब उठाकर
जिलावतन सब हमारे भाई वतन में साहब बुलाना होगा
(१०) मेहकमा खुफ़या पुलिस उठा दो या करदो उसको प्रजा के ताबे
(११) हमें भी बन्दूक़ और पिस्तौल बराय हिफ़ाज़त दिलाना होगा ॥

हमें सबर होगा बस उसी दम जब होंगी पूरी यह ग्यारह शर्तें।
सहे हैं ज़ुल्मो सितम हज़ारों न ज़्यादा हमको रुलाना होगा॥
(स्वतन्त्र भारत की "सिंहनाद" पुस्तक से उद्धृत)

मल्हार।

अरी बहना काहे को बैठी हो चुपचाप, झन्डा तो लेलो हाथ में॥
दुश्मन तो बहना सर पे छागये, अरी बीबी रक्षा करो अपनी
आप.................. झन्डा तो लेलो।
किसका भरोसा बैठी देखती, अरी बीबी दुश्मन से
करो दो दो हाथ---------झन्डा तो।
प्रीतम तो बहना लड़ने जा रहे, अरी बीबी तुम भी चलो सब
साथ----------झंडा तो लेलो।
लक्ष्मी बाई दुर्गा की तरह, अरी बीबी तुम भी लड़ो दिन
रात ....झंडा तो लेलो।
जल्दी निकालो बैरी घर से, अरी बीबी वर्ना करेगा उतपात
झंडा तो लेलो हाथ में
गांधी बाबा बहना कह रहे, अरी बीबी चर्खा चलाओ
दिन रात----------झंडा तो।
लेलो हाथ में॥

मल्हार

अरी बहना गांधी का है फ़रमान, चर्खो तो कातो तुम सभी ॥
अरी बीबी पहनो स्वदेशी कपड़े,
अरी बहना खद्दर का करो प्रचार, चर्खो तो लेलो०
रेशम की साड़ी बहना छोड़ दो, अरी बीबी खद्दर मंगाओ रंगदार
चर्खो तो कातो तुम०
बालम घर में आवे यों कहो, अरी बीबी खद्दर बांधो दस्तार ॥
चर्खो तो कातो तुम सभी
बन्द विलायत से आना सूत हो, अरी बहना बैठ बुने भरतार ॥
चर्खो तो कातो तुम सभी
उजड़ा है कैसा गुलशन देश का, अरी बीबी उस में फिर आवे बहार
चर्खो तो कातो तुम सभी
यश तुम्हारा फैले देश में, अरी बहना गांधी की गाओ मल्हार ॥
चर्खो तो कातो तुम सभी०
जितने कंगाल भारत वासी होगये, अरी बीबी उतने ही बने ज़रदार
चर्खो तो कातो तुम सभी
दुश्मन भाग फ़ौरन हिन्द से, अरी बीबी मच जाय हाहाकार ॥
चर्खो तो कातो तुम सभी०

ग़ज़ल

बांध ले बिस्तर ए जालिम शान अब जाने को है
ऐश काफ़ी कर चुके अब पोल खुल जाने को है
गालियां तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें
मर मिटेंगे मुल्क पर फिर इन्क़िलाब होने को है
क़ौम के ख़ादिम निहत्थों को तुमने भेजा जेल में
आह से उनकी लो अब जेल खुल जाने को है ॥
आगये हैं पटेल भी कारज़ार जंग में
देखना अब राज शाही बे निक़ाब होने को है
लिख दई गांधी ने चिट्ठी आख़िरी शाही के नाम
अब भी संभल जाइये वरना आज़ादी होने को है
मालवी जी ने वार अपना कर दिया विदेशी माल पर
देखना अब मैन्चस्टर भी उजड़ जाने को है

ग़ज़ल

बतर्ज़ रोहतक बहादुर यारा

महात्मा गांधी ने हिला दिया संसार। टेक

वह भोला भाला शादल वाला,

दुनियां में बड़ी अक़ल वाला।

अन्याय में है वह दख़लवाला,

जिससे कांपे सरकार॥ म०

वह दुबला पतला इक नर है,

जिसको अति प्यारा रब हर है।

न जग में उसको कुछ डर है,

रहता है बिन हथियार॥ म०

इक चर्ख़ा उसकी मशीनगन है,

कुछ खद्दरधारी पलटन है।

कोई मोटा कोई सुखे तन है,

ले सत्याग्रही तलवार॥ म०

नहीं ताज साज़ वह वाला है

नहीं नख़रे नाज़ वह वाला है।

इक ख़ाली लंगोटी वाला है,

जिस पै बढ़ते हथियार॥ म०

वह कहता मुल्क न ग़ारत हो,

हाँ बेशक नेक तिजारत है।

और कहे स्वतन्त्र भारत हो,

बस चाहता निज अधिकार॥ म०

॥ खादी का डंका

खादी का डंका आलम में बजवा दिया गांधी बाबा ने
मैनचेस्टर लंका शायर को हिलवा दिया गांधी बाबा ने
देशी वस्त्रों को पहनो तुम, दो छोड़ विदेशी कपड़ों को
यह पाठ भली विधि से हमको, पढ़वा दिया गांधी बाबा ने
देशी धोती, गांधी टोपी, खादी का कुरता और धोती
ओढ़ना बिछौना खादी का, करवा दिया गांधी बाबा ने ॥
मनहूस विदेशी कपड़ों की, जलवा दी भारत में होली
शुभ चलन स्वदेशी खादी का, चलवा दिया गांधी बाबा ने
जो पहन सारियां परदेशी चलती थीं भारत की नारी
खादी से उनका सुन्दर तन सजवा दिया गांधी बाबा ने
सिर से पैरों तक है खादी, खादी के श्वेत समन्दर से
है आज ज़माने के दिल को दहला दिया गांधी बाबा ने ॥
खादी की भक्ति बस ऐसी, है अधिक काम करने वाली
खादी का गोला भारत को, दिलवा दिया गांधी बाबा ने
अब त्याग विदेशी वस्त्रों को, पहनो "दिनेश" देशी खादी
खादी का झंडा भारत में, गढ़वा दिया गांधी बाबा ने ॥

विलखती विधवा नाटक मूल्य ॥)

बेरोज़गारों को सलाह

रूप्या कमाने का उपाय

यह ट्रेक्ट जिस का नमूना आप के हाथ में है, इसी नमूने के हमारे यहां से राष्ट्रीय ट्रेक्ट १६ सुफे, ८ सुफे के निकलते रहते हैं। ब्योपारियों को ८ सुफे का ट्रेक्ट १०) हज़ार और १६ सुफे के २०) फ़ी हज़ार भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस करली जाती हैं॥

पुस्तकों के नाम॥

राष्ट्रीय डन्का	)	शहीदों की याद	)
झांसी की रानी	)	आज़ादी का बिगुल	)
भारत के ज़ख्मी लाल	)	नमक इतिहास	)
कलक्टर साहब की घबराहट	)	स्वदेशी कफ़न	)
कांग्रेस का बिगुल	)	सत्याग्रह की आवाज़	)
क्रान्ति की चिंगारी	)	गाढ़े खद्दर की शादी	)॥

बिलायती कपड़ों का जनाज़ा)॥

हमारे यहां राष्ट्रीय, समाजिक हर तरह की पुस्तकें मिलती हैं। कांग्रेस और आर्य्य समाज को प्रचार के वास्ते पुस्तकें बहुत सस्ती क़ीमत पर दी जाती हैं॥

अग्रवाल बुक डिपो

खारी बावली देहली,